Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 19, Issue No. 1, January-2022, ISSN 2230-7540

मन्नू भंडारी के कथा-साहित्य में नारी चित्रण पर एक अध्ययन

Deepak Kumar[1]* Dr. Anand Kumar Ray[2]

[1] Research Scholar Department of Hindi, Singhania University, Bari Pacheri, Rajasthan

[2] Research Supervisor, Department of Hindi, Singhania University, Bari Pacheri, Rajasthan

***सार –** स्त्री विकास-क्रम की आजादी के बाद स्थिति पर यदि दृष्टि डालें तो स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् की नारी जागरण की गति आश्चर्य में डाल देने वाली है। श्री मन्नू भंडारी के विचार दर्शनीय हैं, "आज की शिक्षित नारी प्रत्येक क्षेत्र में सक्रिय भूमिका निभा रही है। शिक्षा, चिकित्सा, तकनीकी, विज्ञान, कल, कविता, साहित्य-सृजन, पर्वतारोहण, क्रीड़ा-जगत, पुलिस, सेना का कोई भी क्षेत्र ऐसा नहीं है, जहाँ नारी का प्रवेश न होता हो, किन्तु आगे यह कहना भी ज़रूरी समझते हैं कि "कि इस पुरूष-प्रधान समाज में आज भी नारी को बराबर का दर्जा देने में सुगबुगाहट है। यही नहीं समाज की रूढ़िवादी, परम्परावादी एवं कम पढ़ी-लिखी नारियों के विचारों में कुछ विशेष परिवर्तन आज भी नजर नहीं आता है। मन्नू भंडारी का उपन्यास 'समय सरगम' आधुनिक नारी के सन्दर्भ में विशेष महत्व रखता है। ईशान व आरण्या दो ही प्रमुख पात्र है। आधुनिक नारी के रूप में मन्नू भंडारी के नारी-पात्रों में सर्वाधिक आधुनिक है। यह एक साधारण मान्यता है कि भारतीय स्त्री अपने प्रेम का प्रस्ताव आगे बढ़कर नहीं करती है, अपितु प्रस्ताव का इंतजार करती है।*

***कीवर्ड –** मन्नू भंडारी, कथा-साहित्य, नारी चित्रण, यथार्थवाद।*

-----------------------------------x-----------------------------------

परिचय

जीवन की सच्ची अनुभूति यथार्थ है और इसका कलात्मक अभिव्यक्ति का कारण यथार्थवाद है। यथार्थवाद की सृष्टि निराशावादी बनाने के लिए नहीं होती, अपितु सृष्टि आशा को दृढ़तर बनाने के लिए की जाती है। यथार्थ वह है जो साहित्य में समाज के वास्तविक चित्रण के रूप में प्रस्तुत किया जाता है। यथार्थवाद वह है जो साहित्य के किसी भी विद्या के क्षेत्र में यथार्थ चित्रण पर बल देता है और उसके प्रति निरन्तर आग्रहशील रहता है। इसलिए यशथार्थवादी साहित्यकार अपनी रचनाओं में मानव-समाज और मानव-जीवन का जो चित्रण प्रस्तुत करता है, उसका आधार भावना और कल्पना जगत का न होकर भौतिकवादी जगत होता है। वह साहित्य को केवल मानसिक परितृप्ति और भावनात्मक अनुभूति का विषय न मानकर जीवन और समाज के विकास के लिए एक सशक्त माध्यम बनाता है। यथार्थवाद साहित्य का बाहय आवरण है तो वही यथार्थ प्राण।[1]

हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में प्रायरू सभी विद्याओं के अन्तर्गत यथार्थवाद का प्रारंभ और विकास आधुनिक युग में ही हुआ। भारतेन्दु युग में जिन साहित्यिक विद्याओं का आधुनिक रूप में विकास हुआ है वे क्रमशः यथार्थ की ओर उन्मुख प्रतीत होता है। यूरोप की भाँति हिन्दी साहित्य में इसका आरंभ एक विचारोन्दोलन के रूप में नहीं हुआ। इसके विपरीत पाश्चात्य सभ्यता और साहित्य के प्रभाव के बढ़ने के साथ हिन्दी के साहित्यकारों ने यूरोपीय भाषाओं में सुविकसित यथार्थवादी आन्दोलन से प्रेरणा और प्रभाव ग्रहण किया।

जन्म स्थान एवं शिक्षा-दीक्षा

श्रीमती मन्नू भण्डारी का जन्म अप्रैल 1934 को भानपुरा नामक छोटे से गाँव में हुआ जिला-मंदसौर (मध्यप्रदेश) में। उनका बचपन का नाम महेन्द्र कुमारी था। अपने माता-पिता की पांचवी संतान। दो बड़े भाई प्रसन्न कुमार और वसनत कुमार तथा दो बड़ी बहने स्नेहलता और सुशीला का स्नेह बाल्यावस्था से इन्हें आज तक प्राप्त है। मन्नू जी के पिता का नाम सुख संपत राय था। यह हिन्दी पारिभाषिक शब्द कोश के

आदि निर्माता थे। उनका संयुक्त मारवाड़ी परिवार था। मन्नू जी के पिता क्रोधी, अहंवादी एवं आदर्शवादी थे। उन्होने जीवन के कई दिन आर्थिक तंगी में गुजारे, लेकिन कभी किसी से कोई सहायता नहीं ली। वे देश प्रेमी थे। श्री सुख संपत राय जी की मृत्यु कैंसर से हुई। परिवार वालों से बढ़कर उन्हें देश की चिन्ता अधिक थी। मन्नू जी का विवाह राजेन्द्र जी से हुआ, शायद उन्हे अच्छा नहीं लगा और इसी कारण से अन्तिम समय तक अपने दामाद से नहीं मिले। मन्नू जी ने मैं हार गई प्रथम कहानी संग्रह सन 1957 में उन्हीं को अर्पित करते हुए लिखा है - “जिन्होने मेरी किसी भी इच्छा पर अंकुश नहीं लगाया। पिता जी को मन्नू जी की अपने पिता के प्रति नितान्त श्रद्वा इससे स्पष्ट होती है।[2]

कथा-साहित्य में नारी चित्रण

मन्नू भंडारी स्वयं उत्कृष्ट साहित्यकार होने के साथ-साथ प्रसिद्व कथाकार एवं हंस पत्रिका के सम्पादक राजेन्द्र यादव की पत्नी भी है। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से सन् 1959 ई. में एम.ए. की शिक्षा प्राप्त कर दिल्ली विश्वविद्यालय में मिरांडा हाऊस कॉलेज में लम्बे अरसे तक हिन्दी का अध्यापन करने के बाद ये कुछ ही वर्ष पूर्व सेवानिवृत्त हुई है। इससे पूर्व ये कलकत्ता के एक शिक्षण संस्थान में अध्यापन कर रही थी, तभी इनका सम्पर्क- संबंध राजेन्द्र यादव से बन गया, जो अंततरू परिणय-सूत्र में परिवर्तित होकर सामने आया। वैसे मन्नू भण्डारी का पूरा और असली नाम महेन्द्र कुमारी है। घर में सबसे छोटी होने के कारण सब उन्हें प्यार से मन्नू पुकारते थे और वही नाम आगे चलकर प्रचलित हो गया। इतना कि राजेन्द्र यादव से विवाह होने के पश्चात भी वे मन्नू भण्डारी ही रही।

राजेन्द्र यादव के रूप में एक सजग साहित्यकार का पति रूप में प्राप्त होना। इनके लिए लाभकारी सिद्व हुआ। दोनों ने गृहस्थ जीवन की जिम्मेदारियों को साहसपूर्वक ढोने के अतिरिक्त साहित्यिक भागीदारी का मिल-जुल कर निर्वाह किया है। सन 1964 ई. में प्रकाशित प्रसिद्व औपन्यासिक कृति ष्एक इंच मुस्कान पति-पत्नी दोनों की समन्वित देन है। मैं हार गई, तीन निगाहों की एक तस्वीर, यही सच है, एक प्लेट सैलाब, त्रिशुंक, मेरी प्रिय श्रेष्ठ कहानियाँ आदि कहानी-संग्रह तथा आँखों देखा झूठी बाल कहानी-संग्रह और आपका बंटी, स्वामी, कलवा, महाभोज आदि उनके उपन्यास हैं। बिना दीवारों का घर नाटक भी इन्होंने लिखा है। मन्नू भण्डारी ने अपनी कहानी कमरे, कमरा और कमरे में उस नारी के व्यक्तित्व को नीलू के माध्यम से उजागर किया है जो अपने जीवन को अपने तौर पर जीना चाहती है। अपने परिवार में उसने अपने व्यक्तित्व को निखार लिया है। यह परिवार उखड़ा और बिखरा हुआ था और इस परिवेश में उसने एम.ए. पहली श्रेणी में किया। उसने यह निश्चय कर लिया है कि उसके भीतर जो कुलबुलाता रहा, वह इसे बाहर आने का पूरा अवसर देगी। नीलू घर से बाहर निकलकर एक कॉलेज में नौकरी करने लगती है। जो उसे संतोष देता है। वह डॉक्टर भी बन जाती है और उसके लेख पत्र-पत्रिकाओं में छपने लगते है। लेकिन इस असाधारणता का बोध धीरे-धीरे उसे अधूरेपन का बोध कराने लगता है। यह उसे कचोटने लगता है। श्रीनिवास से उसका परिचय सामान्य से विशेष बनता है और विशेष से विवाह में बदल जाता है। वह कॉलेज और होस्टल छोडकर श्रीनिवास के फ्लैट में आ जाती है और यह फ्लैट चार कमरों का है और पूरी तरह सजा हुआ है। उसके पास चुस्त नौकर है और पति का बढ़ता हुआ कारोबार है। इस प्रेम-सम्बन्ध की सफलता के बीतते ही उसे अधिक अकेला कर देती है। उसकी उपलब्धियाँ एक विरामचिन्ह पर टिकती नहीं है, शून्य में फैल जाती है। इसकी किताबें और लेख सन्दूक में बन्द हो जाते है। अपनी पुरानी सहेली का एक लेख उसे पढ़ने को मिलता है जो उसे अपने मिटते जाने का बोध कराता है। सन्दूक में बन्द अपने कागजों को निकालकर जब वह देखती है तो उसे आश्चर्य होता है कि लेख उसके अपने लिखे हुए है। इससे उसे मोहभंग होता है और वह घुटन से घिर जाती है। इस तरह मन्नू भण्डारी नारी की घुटन को या तो पुरूष की बाहों के घेरे में घिरने से या इन बाहों के घेरे से छुटकारा पाने की कामना से उजागर करती है।[3]

मन्नू भंडारी की लघु कथाओं में महिला पात्र

कुछ आलोचक भंडारी की कहानियों को व्यक्तिगत चेतना की अभिव्यक्ति के रूप में मानते हैं लेकिन वे इतने विशाल कैनवास पर खुलते हैं और सार्वभौमिकता को छूते हैं कि वे सामाजिक जागरूकता की कहानियां बन जाते हैं। उनकी कहानियाँ विभिन्न सामाजिक और व्यक्तिगत परिस्थितियों के संदर्भ में भारतीय नारी की नियति को दर्शाती हैं और उसी के अनुसार मूल्यांकन करती हैं। भंडारी की कहानियां नए लोकाचार में एक अशांत लेकिन एक बहादुर स्त्री मानस को प्रभावी रूप से प्रस्तुत करती हैं। उसने एक ऐसी कामकाजी महिला का निर्माण किया है जो उच्च वर्गीय परिवार की महिला के विपरीत खड़ी होती है। महिला, शिक्षित हो या अशिक्षित, विवाहित हो या अविवाहित, पत्नी हो या प्रेमी, अधिकांश स्थितियों में दयनीय स्थिति होती है। मन्नू भंडारी एक महिला की समस्या के इर्द-गिर्द कहानी इस तरह विकसित करता है कि समस्या केवल महिला की नहीं बल्कि समाज की समस्या बन जाती है। मन्नू भंडारी हमें भौतिक विकार और नैतिक संहिता के उल्लंघन की संघर्ष-पहेली की दुनिया में ले जाता है। कभी-कभी महिलाओं को दोहरी भूमिकाओं से परेशान दिखाया जाता है; एक कामकाजी महिला और एक गृहिणी के रूप में उनकी भूमिका। कुछ महिला पात्रों को बहुत ही मनोवैज्ञानिक रूप से

www.ignited.in

दयनीय स्थिति में प्रस्तुत किया जाता है - उनके पति, पति के परिवार के सदस्यों, मध्यम वर्ग की कामकाजी महिला द्वारा धमकाया और कुचल दिया जाता है, स्पिनस्टरहुड की समस्याएं, बलात्कार या शारीरिक अत्याचार के खिलाफ प्रतिरोध दिखाना, समाज में यौन उत्पीड़न का शिकार होना और यहां तक कि महिला की आर्थिक निर्भरता को भी कुशलता से चित्रित किया गया है।

मन्नू भंडारी के कुछ महिला पात्र स्वभाव से विद्रोही हैं। वे अन्याय और शोषण के खिलाफ आवाज उठाते हैं, उनके पास स्वाभिमान और स्वतंत्रता है। वे एक 'मनुष्य' के रूप में अपने अस्तित्व का निर्माण करते प्रतीत होते हैं। ऐसी महिलाएं जीवन में कुछ करना चाहती हैं और अपनी हैसियत से वाकिफ होती हैं। आत्म-जागरूकता वाली ये महिलाएं अपनी गरिमा और सम्मान बनाए रखने की पूरी कोशिश करती हैं। इस तरह के कुछ चित्रण इबसेन द्वारा बनाई गई गुड़िया के घर के नोरा से मिलते जुलते हैं। ऐसा लगता है कि इन महिलाओं ने आत्म-विश्वास और आत्म-सम्मान विकसित किया है। वे अपने अधिकारों के प्रति काफी जागरूक हैं। इसके अलावा कुछ महिला पात्र आधुनिक, शिक्षित, बुद्धिमान और आर्थिक रूप से स्वतंत्र हैं। उनकी शैक्षिक प्रगति और आर्थिक आत्मनिर्भरता उन्हें अपनी स्वतंत्र पहचान स्थापित करने में मदद करती है।[4]

मन्नू भंडारी की लघु कथाओं में महिला का चित्रण

इसमें कोई संदेह नहीं है कि समाज व्यक्ति के लक्षणों को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। समाज के बिना व्यक्ति की पहचान पर गंभीर प्रश्नचिह्न लग जाते हैं। इसलिए किसी व्यक्ति के जीवित रहने के लिए सामाजिक मानदंडों और परंपराओं को आकार देना या ढालना बहुत महत्वपूर्ण हो जाता है। मन्नू भंडारी में स्त्री को असंख्य भूमिकाओं में दर्शाया गया है - पत्नी, माँ, बेटी और अपने आप में व्यक्ति, जो संक्रमणकालीन अवधि में पकड़ी गई समकालीन, शहरी, शिक्षित उच्च-मध्यम वर्ग की महिला की भावनाओं को व्यक्त करने के लिए मन्नू भंडारी की सहज क्षमता को प्रकट करता है। परंपरा और आधुनिकता के बीच मन्नू भंडारी न केवल एक विषयगत और तकनीकी परिपक्वता को व्यक्त करता है, बल्कि एक गहन रूप से पकड़ी गई स्त्री संवेदनशीलता को भी प्रभावी ढंग से संप्रेषित करता है। वास्तव में, उन महिलाओं को आवाज देना एक कठिन काम है, जो खुद अपनी पीड़ा के बारे में सुनिश्चित नहीं हैं और जो आज एक अविश्वसनीय स्थिति में खड़ी हैं। वे अपने व्यक्तित्व के हाशिए पर जाने के बारे में पूरी तरह से जागरूक हैं, लेकिन उन्हें मूक पीड़ा का जीवन जीने की निंदा की जाती है। सुनीता रेड्डी भी इसी तरह के विचार व्यक्त करती हैं कि 'कई मायनों में, उनकी स्थिति पिछली पीढ़ियों की महिलाओं की तुलना में और भी दयनीय है, जिन्होंने निर्विवाद रूप से समाज में अपनी माध्यमिक स्थिति को स्वीकार किया था। निम्नलिखित उप-विषय के तहत जिन कहानियों पर चर्चा की गई है, वे पितृसत्तात्मक संस्कृति को दर्शाती हैं जिसमें बेटी का जीवन सीमांत हो जाता है। उनकी कहानियों का फोकस भारतीय महिलाओं, खासकर मध्यम वर्ग की महिलाओं के जीवन पर रहा है।[5]

बेटियां और जवान लड़कियां

हाल के दिनों में नारीत्व के बारे में पारंपरिक धारणा में बदलाव आ रहा है। पारिवारिक संबंधों का बदला हुआ माहौल भी बेटी के रूप में महिला की भूमिका को प्रभावित कर रहा है। बदलते सामाजिक-सांस्कृतिक परिवेश के प्रभाव के तहत, बेटी के रूप में महिला के रोल सेट का एक अलग पैटर्न होने की संभावना है जो उनके पारंपरिक रोल-सेट से काफी भिन्न हो सकता है। इसके अलावा, बदली हुई परिस्थितियों में, भूमिका निभाने और भूमिका निभाने के साथ-साथ लड़की के रवैये और आकांक्षाओं में नई उभरती हुई शहरी-औद्योगिक सामाजिक व्यवस्था की विशिष्ट विशेषताओं को प्रतिबिंबित करने की संभावना है।

'तीन निगाहों की एक तस्वीर' नामक कहानी की दर्शना

दाम्पत्य-सम्बन्धों के महत्व से भली-भाँति परिचित है। दर्शना अपने रूग्ण पति के प्रति पूर्ण रूप से समर्पित है। अपने सम्पूर्ण समर्पण के साथ वह पति की सेवा करती है। वह पति की सेवा पूरे तन-मन से करती है। तब भी पति का प्रशंसामय एवं प्रेमपूर्ण व्यवहार प्राप्त नहीं होता है। ऐसी स्थिति में खिन्नता एवं विरक्ति उत्पन्न हो जाती है। पति की विरक्ति के कारण वह किरायेदार हरीश की ओर आकर्षित ही जाती है तो पति उसे मार-पीटकर घर से निकाल देता है लेकिन अपने पतिव्रत्य-धर्म को वह तब भी नहीं भूलती।'एक कमजोर लड़की की कहानी' नामक कहानी में रूप एक ऐसी लड़की है,जो अनिच्छा से हुए विवाह के दाम्पत्य-सम्बन्धों के प्रति भी ईमानदार है। ललित नामक युवक से उसका प्रेम था, उसे वह भूल भी नहीं पाती परन्तु वह अपने पति के प्रति निष्ठावान है।[6] उसका प्रेमी उसे भगा कर अपने साथ लेकर जाने को कहता है तो रूप का पातिव्रत्य-धर्म उसे ऐसा करने से रोकता है- "यह तुम क्या कर रहे हो ललित? जानते हो मेरी माँग में किसी और के सुहाग का सिन्दूर है, अग्नि को साक्षी देकर मैं उनकी हो चुकी हूँ।"

वही 'हार' कहानी में पति-पत्नी सम्बन्ध आधुनिक एवं प्रगतिशील चेतना से सम्पृक्त दिखाई देते हैं। शेखर और दीपा आधुनिक विचारों के सुशिक्षित तथा प्रतिद्वन्द्वी राजनीतिक

पार्टियों के कार्यकर्ता हैं परन्तु इसे कभी भी इन दोनों ने अपने बीच की दरार नहीं बनने दिया, “राजनीतिक विचारों का कट्टरपन पूरी तरह से एक-दूसरे पर जाहिर कर दिया था और साथ ही साफ कर लिया था कि शादी के बाद भी हम बदस्तूर अपनी-अपनी पार्टियों का काम करेगें और कभी भूलकर भी अपने विचार दूसरे पर लादने की चेष्टा नहीं करेगें।”

‘तीसरी आदमी’ कहानी के पति-पत्नी अपने मध्यवर्गीय जीवन में खुश हैं। पति विवाह हो जाने पर अपनी पत्नी की आगे पढ़ने की इच्छा को पूरा कर, उसे प्रसन्न रखने का प्रयास करता है। घर का साज, सज्जा तथा अन्य कार्यों में वह अपनी पत्नी का हाथ बंटाता है परन्तु पत्नी शकुन का एक बड़े लेखक आलोक के साथ पत्र-व्यवहार, शकुन का उसकी प्रंशसा करना और आलोक का उसके घर आना आदि बातें अखरती हैं और व्याकुल बना देती है। मन्नू भण्डारी की ‘ऊँचाई’ कहानी में पति-पत्नी सम्बन्धों को एक नई दृष्टि, एक अलग परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत किया गया है। शिवानी का विवाह-पूर्व अतुल के साथ सम्बन्ध था परन्तु बाद में उसका विवाह शिशिर के साथ हो जाता है और शिवानी दो बच्चों की माँ भी बन जाती है। इस दौरान शिवानी और अतुल के बीच पत्राचार चलता रहता है जिस पर शिशिर को आपत्ति होती है। एक बार शिशिर अतुल के पत्र को पढ़ लेता है तो शिवानी से इसकी सत्यता पूछता है और शिवानी की स्वीकृति के बाद आवेश में वह घर छोड़कर ही चला जाता है।[7]

नारी की विभिन्न स्थितियाँ

मन्नू भंडारी के कथा-साहित्य में नारी-जीवन तथा नारी-चरित्र प्रायः निरन्तरता के क्रम में हैं। मन्नू भंडारी के चरित्र प्रायः यथार्थ जीवन की निरन्तरता के क्रम मे जीने वाले है जो यथासम्भव सजीव पात्र लगते हैं। ये ऐसे पात्र व चरित्र हैं जो जीवन को यथास्थिति स्वीकार कर लेते हैं। इसी कारण ये पात्र जीवन की कटुता तथा आनन्द दोनों को साथ-साथ भोगते दिखाई देते हैं। मन्नू भंडारी का साहित्य मुख्यतः अपने नारी-चरित्रों के लिए जाना जाता है। मन्नू भंडारी के नारी-चरित्र न केवल समाज के भिन्न-भिन्न वर्गों से सम्बन्धित है, अपितु अलग-अलग सामाजिक स्थितियों, के भी परिचायक हैं। इन नारी-चरित्रों की सामाजिक स्थितियाँ उनकी अतृप्ति, कुंठा, निराशा, आशा, आकांक्षा, प्रेम, समर्पण आदि भावनाओं को स्पष्ट करने के लिए उत्तरदायी हैं। वहीं मन्नू भण्डारी का कथा-साहित्य भी अपने नारी-चरित्रों का सामाजिक-परिवेश व स्थितियों की दृष्टि से चरित्रांकन करता है। इन चरित्रों के व्यवहार में कभी कोई दुस्साहस, कभी विरोध या प्रतिरोध दिखाई देता है। नारी की विभिन्न स्थितियाँ ही इन सभी प्रकार की मनः स्थिति तैयार करती है।

मन्नू भंडारी के उपन्यास-संसार की चर्चा करते हैं तो ‘कुटुम्बप्यारी’ का चरित्र एक गृहस्थ नारी के जीवन की विभिन्न मानसिक व चारित्रिक स्थितियों को प्रस्तुत करता है। कुटुम्बप्यारी मन्नू भंडारी के उपन्यास ‘दिलोदानिश’ के प्रमुख पात्र कृपानारायण की धर्म पत्नी है। पानारायण को कुटुम्बप्यारी से तीन बेटे हैं। कुटुम्बप्यारी अपने आरम्भिक समय मे बड़ी कर्तव्यपरायण एवं पतिव्रता स्त्री रही है। जब से कुटुम्बयारी को कृपानारायण और महकबानो के नाजायज सम्बन्धों तथा उनकी दो सन्तानों बदरू-मासूमा के विषय में पता चला है, वह एकदम उखड़ जाती है। उसका यह भरसक प्रयत्न रहता है कि किसी प्रकार वह अपने पति का हृदय अपनी ओर मोड़ ले, उस बाजारू औरत से छीन ले। इसी कारण वह एक तान्त्रिक बाबा से मिलकर अपना दुखड़ा सुनाती है। बार-बार महकबानो से अपने पति का पीछा छुड़ाने की बात कहती है। इसके प्रभाव के विषय में तो कुछ कहा नहीं जा सकता परन्तु कुटुम्बप्यारी पर इसका विलक्षण प्रभाव हुआ और वह अपना सतीत्व खो बैठती है। कुटुम्बप्यारी के अक्सर बाबा के यहाँ आने-जाने का पता महकबानो से कृपानारायण को चलता है तो वह स्तब्ध रह जाते हैं। इसी के प्रभाव स्वरूप कृपानारायण का कोठे से अधिक घर पर रहन-सहन बढ़ जाता है। यहाँ यह बात विशेष ध्यान देने योग्य है कि तान्त्रिक बाबा के पूरे सन्दर्भ में कुटुम्बप्यारी को किसी प्रकार की ग्लानि नहीं है। वही कृपानारायण की माँ बउआजी द्वारा महकबानो को दिये गये खानदानी कंगनों को भी कुटुम्बप्यारी वापस ले आती है। इससे सिद्ध होता है कि कुटुम्बप्यारी बेमिसाल जिद की सूचक है। कुटुम्बप्यारी एक साधारण गुहस्थिन है। वह अपने पति से उम्रभर नाराज रहती है, लेकिन पति के वापस लौट आने पर वह पूरी संवेदनशीलता के साथ उनकी सुविधाओं का ध्यान रखती है। उनके समक्ष इस प्रकार व्यवहार करती है, मानो कुछ हुआ ही न हो।[8]

आधुनिक नारी

स्त्री विकास-क्रम की आजादी के बाद स्थिति पर यदि दृष्टि डालें तो स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् की नारी जागरण की गति आश्चर्य में डाल देने वाली है। श्री कृष्णकिशोर के विचार दर्शनीय हैं, “आज की शिक्षित नारी प्रत्येक क्षेत्र में सक्रिय भूमिका निभा रही है। शिक्षा, चिकित्सा, तकनीकी, विज्ञान, कल, कविता, साहित्य-सृजन, पर्वतारोहण, क्रीड़ा-जगत, पुलिस, सेना का कोई भी क्षेत्र ऐसा नहीं है, जहाँ नारी का प्रवेश न होता हो, किन्तु आगे वह यह कहना भी ज़रूरी समझते हैं कि “किन्तु इस पुरूष-प्रधान समाज में आज भी नारी को बराबर का दर्जा देने में सुगबुगाहट है। यही नहीं समाज की रूढ़िवादी,

www.ignited.in

परम्परावादी एवं कम पढ़ी-लिखी नारियों के विचारों में कुछ विशेष परिवर्तन आज भी नजर नहीं आता है।”

आज नारी उत्थान के प्रति सजग अनेक पत्र-पत्रिकाओं ने अपने विशेषांकों में जो कुछ लिखा उसमें नारी-उत्थान की अपेक्षा कुत्सित प्रसंगों की ही भरमार है। निसन्देह ये कुत्सित प्रसंग आज की भोगवादी पूँजीवादी सभ्यता की विकृति की परिणति है। “नारी उत्थान के नाम से किये गए ये प्रयास नारी को प्रभाव के गर्त में ढकेलते नजर आ रहे हैं। भोगवाद के समर्थक पुरूष उसके उत्थान के प्रति उतना सजग नहीं। जितना अपनी मानसिक विकृति को तुष्ट करने में संलग्न है और नारी आन्दोलन से जुड़ी महिलाएँ तो पुरूषों की महत्वकाक्षांओं की पूर्ति का माध्यम बनकर रह गयी हैं।

प्रख्यात कथा-लेखिका मन्नू भण्डारी इस सम्बन्ध में लिखती है, “शिक्षा, आर्थिक स्वतन्त्रता, अपनी अस्मिता की पहचान, बड़े-बड़े पदों पर काम करने से उपजे आत्मविश्वास ने एक बिल्कल नई स्त्री को जन्म दिया है। उसकी अपेक्षा पुरूषों में बहुत कम परिवर्तन हुआ है। रात-दिन आधुनिकता का दम्भ भरने वाले, बड़े- बड़े भाषण फटकारने वाले लेखों का अंबार लगा देने वाले इन वांछित तथा आधुनिक पुरूषों की चमड़ी की बस एक परत उतारिए कि आप पाएगें वही सामंती संस्कारों वाला पति, जो स्त्री पर शासन करना अपना जन्मसिद्ध अधिकार समझता है।” यौन भावना, काम, विवाहोत्तर सम्बन्ध आदि को लेकर आधुनिक नारी का दृष्टिकोण बदला है और इन सबको लेकर उसके मन में कोई अपराध-बोध नहीं है अपितु अब तो वह अपने लिए नए नैतिक-मूल्यों को भी निर्धारित करने लगी है। तमाम विडम्बनाओं के बावजूद हमारा यह विश्वास है कि “यदि यह शताब्दी उसके अस्तित्व की थी तो अगली शताब्दी उसके व्यक्तित्व की है।[9]

नारी का स्वावलम्बी रूप

यह एक सर्वविदित तथ्य है कि भारतीय सामजिक व्यवस्था में पुरूष का स्थान नारी से उच्च माना जाता रहा है। यही बात ’परिवार’ संस्था पर भी लागू होती है, जहाँ अनायास ही पति को पत्नी से श्रेष्ठ स्थान प्राप्त है। ‘पति-पत्नी’ गृहस्थी रूपी गाड़ी के दो पहिए है, यह मात्र कहावत तक ही सीमित है। वस्तुतः पति परिवार का मुखिया है और पत्नी से यह आशा रखी जाती है कि वह उसके निर्देशों का पालन करें, ताकि वैवाहिक जीवन की गाड़ी व्यवस्थित रहे। पति कितना भी शिक्षित व उच्च पद पर आसीन क्यों न हो परन्तु उसके अन्तः करण में ऐसी पत्नी की आकांक्षा छिपी रहती हैं जो सहधर्मिणी न होकर, अनुगामिनी अधिक हो परन्तु जहाँ यह समीकरण बदलते हैं वहाँ पर वैवाहिक स्थिति समस्याग्रस्त हो जाती है। युग में परिवर्तन के साथ शिक्षा के प्रसार और नारी के घर के बाहर कार्य-क्षेत्र में पदार्पण करने के कारण उसकी सामाजिक स्थिति में परिवर्तन आता गया। परिणामतः सदियों से चला आ रहा, पति-पत्नी के वैवाहिक सम्बन्धों का समीकरण डगमगाने लगा जिसमें पुरूष को परिवार के मुखिया की सत्ता प्राप्त थी। अब स्वावलम्बन का सम्बल पाकर नारी अपने अधिकारों के प्रति सचेत हो गई और वह समान पारिवारिक निर्णयों और समानता के अधिकार की बात कहने लगी। उसमें अपने स्वतन्त्र अस्तित्व का बोध जाग्रत हुआ और उसने पारिवारिक मान-मर्यादा बनाए रखने के नाम पर अपने व्यक्तित्व को कुचला जाना अस्वीकार कर दिया। नारी के आर्थिक क्षेत्र में पदार्पण से परिवार के आर्थिक स्तर में सुधार तो आया परन्तु सामंजस्य व सन्तुलन डगमगाने लगा। सदियों से भारतीय पुरूष जिस जड़ मानसिकता का आदी रहा था, नवसृजित परिस्थितियों के आघात सह नहीं पाया। जिसका सीधा प्रभाव समाज-व्यवस्था व परिवार पर दिखाई देता है। इस परिवर्तित सामाजिक परिदृश्य ने परिवार के स्वरूप को पूर्णरूपेण प्रभावित किया, जिसकी सर्वाधिक नकारात्मक परिणति दिनोंदिन बढ़ते तलाक तथा पारिवारिक बिखराव के रूप में सामने आई। परिवार की मधुरिमा नष्ट होने की कगार पर पहुँची है।

स्वावलम्बी, स्वतन्त्र और मानसिक दबावों से मुक्ति की आकांक्षा रखने वाली स्त्री का चरित्र-चित्रण यों भी काफी पहले से हाता रहा है और जब-तब दीप्त करा देने वाली प्रभाव-क्षमता के कारण जन-मानस को अभिभूत करता आया है। इतिहास काल की अनेक स्त्रियों के चरित्र के उदाहरण देखे जा सकते हैं किन्तु प्रस्तुत कथा-काल की कहानियों में चित्रित स्वावलम्बी तथा मानसिक मुक्ति की आकांक्षा रखने वाली स्त्रियों का चरित्र भी कुछ कम प्रभावी नहीं है। वह हमें एक एसी उदात्त विशालता की मानसिकता से जोड़ देता है, जहाँ हमारी तात्कालिक क्षुद्रता कुछ समय के लिए क्यों न सही, हमसे दूर हो जाती है।

साहित्य की समीक्षा

बाबू गुलाब राय (2013) के अनुसार, “यथार्थ वह है जो नित्य प्रति हमारे सामने घटता है। उसमें पाप-पुण्य, सुख-दुःख की धूप छाँह का मिश्रण रहता है। यह सामान्य भाव भूमि के समतल पर रहकर वर्तमान की वास्तविकता से सीमाबद्ध रहता है। स्वर्ग के स्वर्णिम सपने उसके लिए परी देश की वस्तुएँ हैं जो उसकी पहुँच से बाहर है। वह संसार की कलुष-कालिमा पर भव्य

www.ignited.in

आवरण नहीं डालना चाहता। वह स्वर्ग को भी मिट्टी के कणों से मिश्रित देखना चाहता है।[10]

सुधा अरोड़ा (2014) मन्नू जी की कहानियों की विशेषता बताते हुए लिखती हैं - "हिन्दी कथा-साहित्य की शीर्षस्थ लेखिकाओं में मन्नू भंडारी एक जाना-माना, प्रतिष्ठित नाम है और उनकी कहानियाँ इस भूमिका को बखूबी निभाती है। मन्नू न जी का लेखन पाठकों के साथ बड़ी सहजता से तादात्मय स्थापित कर लेता है। इसका एक सीधा कारण जीवन में उनका अलेखक होना है - एक निहायत सीधा-सादा, आडंबरहीन, ईमानदार और बेहद पारदर्शी व्यक्तित्व, जिसका पचास साल पुरानी कहानियाँ, आज भी उसी तरह उद्देलित करती हैं, जैसे तब करती थीं, जब कथा-लेखन में महिला रचनाकार उँगलियों पर गिनी जा सकती थी। दूसरा कारण उनका अपने समाज के दायरे से ऐसे पात्रों और मुद्दों को उठाना है जो सहज ही एक बड़े वर्ग का प्रतिनिधित्व करते हैं और ऐसे कथानक को बेधक, सहज संप्रेषित होने वाली सादी, लेकिन चुस्त और पैनी भाषा में - जिसमें न ज्यादा घुमाव है, न पेच- अपने पाठकों तक पहुँचा देना कि कहानी के निहितार्थ तक पहुंचने में पाठकों को किन्हीं आड़े-तिरछे रास्तों से होकर न गुजरना पड़े।[11]

जयशंकर प्रसाद (2014) के विचार से, "यथार्थवाद जीवन की अभिव्यक्ति और आदर्शवाद अभावों की पूर्ति है। डॉ0 नन्दह दुलारे बाजपेयी का कथन है कि यथार्थवाद तथा आदर्शवाद दोनों ही चित्रण शैली के दो स्थूल विभाग मात्र है। दोनों ही शैलियाँ लेखक के दृष्टिकोण पर अवलंबित रहती है। कला की सौन्दर्य सत्ता की ओर दोनों का झुकाव रहता है। आदर्शवाद में विशेष या इष्ट के आग्रह द्वारा इष्ट ध्वनित होता है। यथार्थवाद में सामान्य व अभीष्ट के चित्रण द्वारा इष्ट की व्यंजना होती है।[12]

डॉ. भागीरथ मिश्र (2015) लिखते हैं कि, "प्रगतिवाद (यथार्थवाद) हमारे अंतर्गत सामाजिक और नैतिक चेतना जागृत करता है। समाज के दुःखों की ओर हमारा ध्यान ले जाता है और जीवन समस्याओं को, सामाजिक विषमताओं को विकराल रूप में जैसा कि हम नित्य के जीवन में देखते हैं - उपस्थित करता है।[13]

शिवदान सिंह (2016) ने, "आदर्शवाद को पलायनवाद माना है। प्रगतिवादी लेखक यथार्थवाद को ही सच्चा मानते हैं। दैनिक जीवन का चित्रण इस प्रकार है कि यथार्थवादी कलाकर शिव, अशिव तथा सुन्दर-असुन्दर का ध्यान नहीं रखता, अपितु नियत्य प्रति में देखें, सुने सत साहचर्य में आए सभी चरित्रों एवं परिस्थतियों का चित्रण करता है। यथार्थवादी वस्तुओं की पृथक-पृथक सत्ता का समर्थन करता है। उसकी प्रवृत्ति समष्टि की ओर न रहकर व्यष्टि की ओर रहती है। यथार्थवादी प्रत्यक्ष वस्तु जगत से सम्बन्ध रखता है। वह सत्य का खोजी है और उसका सत्य अपनी इंन्द्रियों से जाना हुआ सत्य है। यथार्थवाद का सम्बन्ध वैज्ञानिक दृष्टि से है। उसका उद्देश्य यथार्थ, स्वाभाविक, सरल, स्पष्ट, मूर्त एवं वर्तमान जीवन से प्रेम रखने वाले चित्रों को प्रस्तुत करना है।[14]

अध्ययन का उद्देश्य

- मन्नू भंडारी के कथा-साहित्य में नारी चित्रण का अध्ययन
- मन्नू भंडारी के उपन्यास में समकालीन यथार्थ के परिपेक्ष्य में
- मन्नू भण्डारी के कथा-साहित्य में यथार्थबोध

अनुसंधान क्रियाविधि

स्वतंत्र हिन्दी साहित्य में अनेक नई महिला लेखिकाएँ उभरीं और उन्होंने पाठकों और आलोचकों का ध्यान आकर्षित किया लेकिन शुरुआती चमक के बाद उनमें से कुछ ने अपने सफल करियर का लेखन नहीं किया। साहित्यिक लेखन के क्षेत्र में अनेक महिला लेखकों ने प्रवेश किया है। कई उच्च प्रतिभाशाली लेखकों ने अपने रचनात्मक लेखन से हिंदी साहित्य को समृद्ध किया है। मन्नू भंडारी विशेष ध्यान देने योग्य हैं, कथा की दुनिया में उनका योगदान 6 वें वर्ष तक है। उन्होंने साहित्य की विभिन्न विधाओं में लिखा और प्रयोग किया है जैसे लघु कहानी उपन्यास, राजनीतिक उपन्यास और बच्चों के लिए साहित्य, नाटक, स्क्रीन प्ले, और फिल्म के लिए संवाद आदि। मन्नू भंडारी को स्वतंत्र हिंदी साहित्य में प्रतिष्ठित महिला लेखक माना जाता है। उन्हें नई कहानी आंदोलन की लघु कथाकार भी माना जाता था।

मन्नू भंडारी के कथा-साहित्य में नारी चित्रण का अध्ययन

नई कहानी से निकलने वाली वास्तविकता बहुत कड़वी है जो परंपरा से बंधे भारतीय सामाजिक संरचना के प्रति स्पष्टता और वस्तुनिष्ठ वैज्ञानिक दृष्टिकोण का परिणाम है। संवेदनशील मनुष्य प्रत्येक घटना और पारंपरिक मूल्यों का मूल्यांकन बुद्धि और निष्पक्षता की दृष्टि से करता है। फलस्वरूप भारतीय सामाजिक मूल्य इस सूक्ष्म दृष्टि से निरर्थक लगते हैं। मन्नू भंडारी ने अपने लघु कथा साहित्य में अपने सूक्ष्म अवलोकनों को सफलतापूर्वक चित्रित किया है। मन्नू भंडारी ने हिंदी लघुकथा की दुनिया में पुरुष-महिला संबंधों के कुछ अंतरंग चित्रणों में योगदान दिया है। भंडारी की

महिला पात्रों को बेटी, युवा कॉलेज गर्ल, अविवाहित महिला, पत्नी और मां के रूप में विभिन्न लिंग भूमिकाओं का प्रदर्शन करते हुए दर्शाया गया है। उनमें से कुछ इस पारंपरिक रूप से सौंपी गई भूमिका से ऊपर उठ जाते हैं जबकि उनमें से कुछ पारंपरिक भूमिकाओं से संबंधित होते हैं। मन्नू भंडारी ने परिवार और समाज में नारी की समग्र तस्वीर को एक अलग आयाम दिया है। महिलाओं के मानस के व्यक्तित्व को पंगु बनाने वाले भेदभावपूर्ण सामाजिक-सांस्कृतिक मूल्यों, दृष्टिकोण और व्यवहार को उनकी कहानियों में उजागर किया गया है। उनके लघु उपन्यासों में महिलाएं सामाजिक बंधनों में रहकर काम करती दिखाई देती हैं।

मन्नू भंडारी के उपन्यास में समकालीन यथार्थ के परिपेक्ष्य में

एक रचनात्मक लेखक के रूप में भंडारी ने छह उपन्यास, नौ लघु कहानी संग्रह, दो पूर्ण लंबाई के नाटक, एक अभिनय नाटकों का एक संग्रह, बच्चों के लिए तीन काम, स्क्रीन नाटक और संवाद लेखन के साथ हिंदी साहित्य का योगदान दिया। भंडारी की कृतियों का विभिन्न भारतीय भाषाओं में अनुवाद किया गया है। उनके प्रसिद्ध उपन्यास आपका बंटी का गुजराती, मराठी और अंग्रेजी में अनुवाद किया गया है। निरंजन सत्तावाला ने गुजराती में अनुवाद किया है। मराठी में इंदुमती शेवाडे ने अनुवाद किया है जबकि जय रतन ने इसका अंग्रेजी में अनुवाद किया है। चाहे वह लघु कथाएँ या उपन्यास या नाटक लिखती हों, भंडारी मुख्य रूप से रोज़मर्रा के भारत के बारे में लिखती हैं। जिस समाज में हम सांस लेते हैं, जिस संस्कृति से हम संबंध रखते हैं। उसकी प्रमुख चिंताएँ हमारे अपने परिवेश से, हमारी तात्कालिक दुनिया से, हमारे अपने जीवन में दर्पण धारण करने से उत्पन्न होती हैं। भंडारी का पहला उपन्यास एक इंच मुस्कान उनके पति राजेंद्र यादव के साथ संयुक्त रूप से लिखा गया है। उन्होंने 1969 के दौरान मासिक पत्रिका ज्ञानोदय में जनवरी से दिसंबर तक बारह एपिसोड में इस उपन्यास को क्रमबद्ध किया।

मन्नू भण्डारी के कथा-साहित्य में यथार्थबोध

महापंडित राहुल सांस्कृत्यायन की मान्यता है कि मानव-समाज का विकास तीन चरणों में हुआ है जंगली, बर्बर और सभ्य। उन्होंने एंगेल्स का हवाला देते हुए लिखा है कि इन तीनों चरणों में मनुष्य के इतिहास का सबसे बड़ा भाग जंगली मानव-समाज का इतिहास है। तब मुनष्य के पास साधनों की कमी थी और उसे अपनी बढ़ती हुई आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए, व्यक्ति से अधिक समाज पर भरोसा रखना पड़ता था। इसलिए उसकी जो कुछ भी थोड़ी बहुत संपत्ति थी, वह सामूहिक थी। सभी मिलकर एक दूसरे की रक्षा करते थे, साथ मिलकर भोजन संग्रह करते थे और एक साथ उसका उपभोग होता था। मारिट हार्कनेस को लिखे गये एक पन में एंगेल्स ने लिखा था कि 'मेरी राय में, यथार्थवाद का अर्थ तफसील सच्चाई का आम परिस्थितियों में आम चरिन्नों का सच्चाई भरा पुनर्सजन है। अपने इसी पत्र में एंगेल्स ने लिखा था कि लेखक के विचार जितने छुपे रहे, कला की कृति उतनी ही अच्छी होती है। मैं जिस यथार्थवाद की बात कर रहा हूँ बह लेखक के दृष्टिकोण के बावजूद उभर सकता है। जाहिर है कि एंगेल्स बुनियादी तौर पर एक राजनीतिक विचारक तथा दार्शनिक थे। अर्थशास्त्र में मार्क्स एंगेल्स की गहरी रुचि सर्वविदित है।

निष्कर्ष

मन्नू भंडारी अपनी रचानाओं में नारी-पात्रों का चित्रण करते समय अधिक ध्यान इस पर देती है कि उनके नारी पात्र मानवीय अधिक हो नैतिक मर्यादाओं के साँचे में ढली कठपुतलियों के रूप में ना हो वह अपने नारी-पात्रों को बेलौस व बेबाक ढंग से प्रस्तुत करती है, किसी भी प्रकार की संकीर्णता से मुक्त होकर। मित्रो तथा रत्ती जैसे पात्र मन्नू भंडारी की रचनात्मक प्रयोगशाला का आविष्कार कहे जा सकते है। देह-धर्म का ईमानदार स्वीकार उनकी विशेषता है। पुरातन संस्कारों तथा रूढ़ियों से मुक्त नारी-चित्रण में मन्नू भण्डारी भी सिद्धहस्त हैं और अपने अनुभवों के आधार पर आधुनिक नारी की सामाजिक नियति और मानसिकता को बड़ी गहराई से उभारती है। उनकी नारी पुरानी रूढ़िवादी नहीं हैं। वे उसे संस्कारो की बेड़ियाँ नहीं पहनाती वरन् आधुनिक और गतिशील है। मन्नू का मानना है कि आधुनिकता वह है, जो दूसरे के पक्ष को समझने की क्षमता रखती हो, एक आधुनिक स्त्री भी एक आदर्श स्त्री हो सकती है। मन्नू जी के नारी-पात्रों में भले ही बोल्डनेस न दिखाई दे किन्तु नारी के मौलिक व्यक्तित्व का अन्वेषण तथा उसके चरित्र का यथार्थ निरूपण करने के लिए जिस गहरी अर्न्तदृष्टि तथा निस्संग विश्लेषण की अपेक्षा होती है उसकी मन्नू के यहाँ कमी नहीं है।

संदर्भ

1. यादव राजेन्द्र (1996) "कहानी अनुभव और अभिव्यक्ति" प्रकाशक द्द वाणी प्रकाशन 24-ए, दरियागंज, नई दिल्ली"-440002, संस्करण प्रथम-1996, द्वितीय-2000 आवृत्ति--2009, 7055-473

2. मिश्र, रामदरश (2007) "हिन्दी कहानी अंतरंग पहचान द्द लेखाधीन संस्करण-2007 आवृत्ति-2044, I584-978-84-8443-649-8

3. पाण्डे, प्रो. गोविन्द चन्द्र, नगेन्द्र प्रो. शीतला प्रसाद (2008) “साहित्य और सामाजिक परिवर्तन” सांदन बद्रीनारायण ए,आर, मिश्रा, प्रकाशक-वाणी प्रकाशन, 24-ए, दरियागंज, नई दिल्ली-440002, संस्करण-प्रथम-1997, द्वितीय-2008, 583 8-7055-577-9.

4. शाह, डॉ. साधना (2010) हिन्दी कहानी “ संरचना और संवेदना” प्रकाशक-वाणी प्रकाशन, 24-ए, दरियागंज, नई दिल्ली-440002, संस्करण प्रथम 2000, द्वितीय 2008.

5. सोनवणे, डॉ. सूर्यनारायण, रणसुभे, डॉ. सूर्यनारायण (2014) “कहानीकार अज्ञेय सन्दर्भ और प्रकृति” संस्करण द्वितीय, 2044. I98I७-8-8870-99-0

6. डॉ. सुधारीनी (2013) “कमलेश्वर जीवन यथार्थ के शिल्पी” प्रकाशन-वाणीप्रकाशन, 4695, 24-ए, दरियागंज, नई दिल्ली-440002, संस्करण प्रथम-2043, 5072-523-8

7. मिश्र, रामदरश (2013) “आलोचना का आधुनिक बोध” सम्पादक- वाणी प्रकाशन, प्रथम-2043 5072-565-8

8. लाल, डॉ. लक्ष्मीनारायण-2014 “आधुनिक हिन्दी कहानी” प्रकाशक- वाणी प्रकाशन, 4695, 24-ए, नई दिल्ली-440002, संस्करण प्रथम-1989, द्वितीय-2004, आवृत्ति-2014.

9. गुप्त, शम्भू (2015) “कहानी की अन्दरूनी सतह” प्रकाशक-वाणी प्रकाशन, 4695 24-ए, दरियागंज, नई दिल्ली -440002, संस्करण-प्रथम-2015, 5072-990-8

10. गुप्त, शम्भू (2016) “कहानी यथार्थवाद से मुक्ति” प्रकाशक-वाणी प्रकाशन, संस्करण-प्रथम-2016, 5229-344-8

11. मधुरेश, “हिन्दी उपन्यास का विकास” लोक भारती प्रकाशन, इलाहबाद, संस्करण-2016

12. मधुरेश, “हिन्दी उपन्यास सार्थक की पहचान”, स्वराज प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण 2002.

13. सुरेंद्र उपाध्याय, कहानी स्वरूप और विशालशन, जयपुर, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, 1996।

14. जोशी. पी.जी. मन्नू भंडारी का फिक्शन स्टडी इन वूमेन एम्पावरमेंट एंड पोस्टकोलोनियल डिस्कोरस, प्रेस्टीज बुक्स, नई दिल्ली-2003।

Corresponding Author

Deepak Kumar*

Research Scholar Department of Hindi, Singhania University, Bari Pacheri, Rajasthan